गठबंधन राजनीति में छोटे दलों की भूमिका
(बिहार के विशेष संदर्भ में)

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा के राजनीति विज्ञान विषय में पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध सारांशिका- 2020

शोध निर्देशक:

प्रो. डॉ. राजू मोची
राजनीति विज्ञान विभाग
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

शोधार्थी:

नाम- सुदेश्वर कुमार
विषय- राजनीति विज्ञान
विभाग- राजनीति विज्ञान
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

Introduction / परिचय

गठबंधन राजनीति का परिभाषा:-

"विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम के तहत राजनीतिक गतिविधियों के संचालन के लिए बनाए गए गठबंधन को गठबंधन की राजनीति कहा जाता है"।

भारत में गठबंधन सरकार की कल्पना स्वर्गीय डॉ॰ राम मनोहर लोहिया ने की थी उनका मत था कि केंद्र या राज्यों में सत्ता पर कांग्रेस का जो एकाधिकार है वह तभी समाप्त हो सकता है जब विभिन्न राजनीतिक दल जो कांग्रेस के विरुद्ध है, वे अपने मतभेद भूलकर कांग्रेस के विरुद्ध चुनावी समझौता करें और सरकार भी बनावे वस्तुतः भारतीय राजनीति में 1967 मे हुई चतुर्थ आम चुनाव के पूर्व तक भारत में एक दलीय प्रधानता की स्थिति थी। इस समय तक केंद्र और लगभग सभी राज्यों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सरकारें सत्तारूढ़ रही जबकि चौथे आम चुनाव तक भारत में 8 राष्ट्रीय दल और अनेक क्षेत्रीय अथवा राज्य स्तरीय दल विद्वमान थे। 1967 के चतुर्थ आम चुनाव के बाद 9 राज्यों उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, केरल और मद्रास में कांग्रेस इस स्थिति में नहीं आ पाई कि वह अकेले दम पर स्वयं अपनी सरकार बना सकें। यहीं से भारत में गठबंधन सरकारों का प्रयोग (राज्य स्तर पर) प्रारंभ होता है।

बिहार में भी पहली बार 1967 मे संविदा सरकार बनी। पहले गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री महामाया प्रसाद सिन्हा बने। इस प्रकार से बिहार में तीन दशकों के कांग्रेस के एकछत्र राज्य समाप्त हो गया और गठबंधन सरकार अस्तित्व में आई। परंतु गठबंधन सरकार मे स्थायीत्व नहीं रहा है। जिसका परिणाम यह हुआ कि बिहार ने एक साल में चार मुख्यमंत्री को देखा। इसी प्रकार से गठबंधन की सरकार 80 के दशक तक बनती बिगड़ती रही। 90 के दशक में पहली बार एक स्थाई गठबंधन की सरकार बिहार में बनी। जिसके विधायक दल के नेता लालू प्रसाद यादव को चुना गया। परंतु इस दौर में भी

जनता पार्टी में से कई पार्टियों का उद्भव हुआ है। और अपने-अपने जनाधार को मजबूत करने में लगे रहे । जिसका परिणाम यह हुआ कि 2005 के विधानसभा चुनाव में लालू राज्य की समाप्ति हो गई। और बिहार में राजग (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) की सरकार बनी जिस के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी बने। और वर्तमान समय तक राजग की सरकार है चुकी बीच में 2 साल के लिए नीतीश, लालू यादव के पार्टी राजद के साथ गठबंधन कर लिए परंतु यह सरकार नहीं चली और नितीश जी फिर से एन०डी०ए० के साथ आ मिले। और वर्तमान में भी बिहार में सरकार के मुखिया नीतीश कुमार हैं।

बिहार में गठबंधन सरकार में छोटे दल बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनका महत्व इतना होता है कि राष्ट्रीय दल भी इन को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं । जैसे हम पार्टी, विकासशील इंसान पार्टी, आर०एल०एस०पी० इत्यादि। इन पार्टियों का महत्व इसलिए अधिक होता है की यह किसी जाति और समुदाय विशेष का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा विधानसभा चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के तौर पर हम बिहार के 17 वी विधानसभा चुनाव के परिणाम में देख सकते हैं कि ए०आई० एम०आई०एम० ओवैसी की पार्टी तथा लोजपा के कारण क्रमशः महागठबंधन और राजग को नुकसान हुआ। जिसका निष्कर्ष निकलता है कि सरकार बनाने और गिराने में छोटे दलों की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

Objective / उद्देश्य

- बिहार के गठबंधन राजनीति में छोटे दलों की भूमिका को समझना।
- गठबंधन राजनीति में विभिन्न दलों के विचारधारात्मक अंत: द्वंद को समझना।
- बिहार के चुनाव में जातिगत समीकरण के महत्व को समझ पाना।
- बिहार में छोटे दलों का अस्तित्व में आने के पृष्ठभूमि को समझना।
- बिहार जैसे पिछड़े राज्य के लिए गठबंधन सरकार की प्रासंगिकता को समझना।
- गठबंधन राजनीति में अवसरवादिता की राजनीति को समझना।

Hypothesis / शोध परिकल्पना

- गठबंधन राजनीति में शामिल सभी दलों की विचारधाराओं का सम्मान होता है।
- छोटे दल अपने जाति, समुदाय, वर्ग और क्षेत्र से संबंधित समस्याओं को सरकार नेतृत्व के सामने उठाते हैं।
- गठबंधन राजनीति से एक मजबूत विपक्ष का निर्माण होगा।
- बिहार राज्य के सर्वांगीण विकास के लिए एक स्थाई, मजबूत गठबंधन सरकार की आवश्यकता है।
- गठबंधन राजनीति में छोटे दलों को सम्मान पूर्वक स्थान दिया जाता है तथा नीति निर्माण में उनकी सुझाव को तवज्जो दिया जाता है।
- गठबंधन सरकार में एक संतुलित मंत्रिमंडल का गठन होता है।
- गठबंधन राजनीति में अतिवादी विचार के लिए कोई स्थान नहीं होता है।

Literature Review / साहित्य समीक्षा

- प्रस्तुत साहित्य समीक्षा का उद्देश्य बिहार के संदर्भ में गठबंधन राजनीति में छोटे दलों की भूमिका को अच्छे तरीके से समझना है। इस शोध को प्रमाणित एवं स्पष्ट रूप प्रदान करना है।. तथा संबंधित विषय से सरोकार रखने वाले अनेक प्रकार के प्रमाणित शोध साहित्य, संचार मीडिया एवं शोध पत्रिकाएं उपलब्ध हैं। जिनमें हमारे शोध विषय की जानकारी मिलती है।
- राज्य सभा टी०वी० - बिहार की बिसात गठबंधन की राजनीति - प्रकाशन 31.10.2020 एंकर प्रीति सिंह - बिहार में गठबंधन की राजनीति की शुरुआत 1967 ई० के बिहार विधानसभा के चुनाव के नतीजे से होती है। इस चुनाव से बिहार में पहली बार गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री बनते हैं। तथा उस कालखंड को छोड़ दिया जाए तो 1990 के दशक से कांग्रेस का जनाधार कम होता चला गया। तथा बिहार में गठबंधन की राजनीति का दौर शुरू हो गया। जिसमें जातिगत एवं संप्रदायिक समीकरण ने भी अपनी अहम भूमिका निभाई। तथा बहुत सारे छोटे दलों का उद्भव हुआ जो सरकार बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई।

- Coalition Politics in India, Chakrabarty Vidyut, Oxford University Press (2014) : बिहार में जो गठबंधन सरकार का प्रथम प्रयोग 1967 में शुरू हुआ उस समय बिहार में सामाजिक एवं आर्थिक संरचना इस प्रकार से बन रही थी की कांग्रेस की नीतियों से असंतुष्ट था जिसका अनुभवजन्य प्रयोग हमें 1990 के दशक में एक स्थाई गठबंधन सरकार के रूप में देखने को मिला। तथा जनता पार्टी की विचारधारा को लेकर विभिन्न प्रकार के दलों का निर्माण हुआ जो आगे चलकर बिहार की गद्दी पर काबिज हुए।

- गठबंधन राजनीति में बिहार : डबल इंजन सरकार, कुमार, दिनेश प्रभात प्रकाशन- वर्ष 2013 से 17 के बीच में बिहार में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) और महागठबंधन को बनते बिगड़ते देखा तथा इस कड़ी में यह देखने को मिला कि गठबंधन राजनीति के कई-कई पार्टो के बीच कोई अमृत कोश अक्षुण्ण रहा जिससे बिहार समाज की सात्विक चेतना साबुत बची रही है। उसकी संजीवनी से कला विज्ञान और सामाजिक बदलाव जैसे कई क्षेत्रों की उपलब्धियों के फूल भी खिलते रहे। नीतीश कुमार के भाजपा से फिर से हाथ मिलाने के बाद बिहार के लिए केंद्र से टकराव का दौर समाप्त हो गया। जुलाई 2017 में 27 साल बाद पटना और दिल्ली में एक ही गठबंधन की सरकार बनी और इस संयोग को हमारे पिछड़े राज्य के विकास की गति बढ़ाने वाले बदलाव के रूप में देखा गया।

- बिहार की चुनावी राजनीति :- जाति वर्ग का समीकरण (1990-2015) कुमार, संजय, Sage Publication Pvt Limited 2018 : सामाजिक राजनीतिक मुद्दों के प्रति मतदाता की राजनीतिक प्राथमिकताओं दृष्टिकोण और राजनीतिक अभिमुख्ता या झुकाव का निर्धारण उसका सामाजिक परिवेश कैसा है - इस आलोक में तय होता है कि बिहार की आबादी की बनावट पर गौर करें, तो इसमें भिन्न-भिन्न जातियाँ है। बिहार की राजनीति में जाति हमेशा से ही अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण रही है। राजनीतिक दल इसका अपने सामाजिक और राजनीतिक आधार के रूप में व्यवहार करते रहे हैं। यह उनका मूलभूत आधार है जिस पर वे अपने राजनीतिक मंसूबों की इमारत खड़ी करते हैं। बिहार की राजनीति में जाति की इतनी सघन केन्द्रीयता है कि इसके आधार पर यह भी तय होता है कि टिकट

कैसे वितरित किए जाएंगे और चुनाव के पश्चात मंत्रालयों का आवंटन को भी ध्यान में रखकर ही किया जाता है।।

- Ruled or Misruled : Story and Destiny of Bihar, Singh, Santosh, Bloomsbury India Publisher (2015) : बिहार की राजनीति देश की आजादी के बाद से अध्ययन का विषय बना रहा। विशेषकर 1990 के दशक में लालू राज्य जिसने गरीबों को आवाज दी परंतु उनके शासनकाल में अपराधीकरण भ्रष्टाचार अपने चरम सीमा पर थी। जिसके कारण बिहार राज्य बहुत पीछे चला गया। उसके बाद जब 2005 से एनडीए की सरकार नीतीश के नेतृत्व में चली वह बिहार को विकास की गति प्रदान की। परन्तु भोजन विवाद पर एनडीए गठबंधन का टूट जाना और एक दशक बाद फिर से लालू की पार्टी का सत्ता में भागीदारी बनाना नितीश के सुशासन के लिए घातक सिद्ध हुआ और वो फिर से एनडीए के साथ गठबंधन कर लिए। इस तरह बिहार के गठबंधन राजनीति में अवसरवादिता की झलक दिखती है।

Methodology / शोध प्रविधि

इस शोध को तैयार करने के लिए ऑकड़े एवं तथ्यों को द्वितीय स्रोतों से जुटाए जाएंगे। यह शोध ऐतिहासिक घटनाओं के साथ वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किए जाएंगे। जो शोधकर्ता (मैंने) व्यक्तिगत अनुभवों तथा ज्ञान से प्राप्त किए हैं। इस शोध में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक , तुलनात्मक एवं व्यवहारवादी विधि का प्रयोग किया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों एवं अन्य वेबसाइटों से प्राप्त की गई है। आवश्यकता के अनुसार यदि जरूरत पड़ी तो अध्याय, अनुसंधान प्रविधि या शोध के अन्य अंशो में बदलाव किया जा सकता है।

Significance of Study / शोध का महत्व एवं आवश्यकता

- गठबंधन राजनीति में छोटे दलों की भूमिका कैसी है।
- बिहार में गठबंधन राजनीति के उद्भव के क्या कारण रहे है।
- विभिन्न राजनीतिक दलों की विचारधारा की प्रासंगिकता अब कितनी रह गई है।
- बिहार में जो गठबंधन सरकार (संविदा सरकार) बनी उसके अस्थायी होने के क्या कारण थे।
- छोटे दलों के अस्तित्व में आने के पृष्ठभूमि को समझा जा सकता है।
- विपक्ष के रूप में छोटे दलों का महत्व।
- बिहार के विकास में छोटे दलों की भूमिका।

Chapterisation / अध्यायीकरण

1 शोध परिचय।

2 बिहार में गठबंधन सरकारों का युग (1967 ई० से 2020 ई० तक)।

3 बिहार में गठबंधन सरकार की विशिष्ट प्रवृत्तियां व समस्याएं।

4 बिहार में सरकार गठन में छोटे दलों का महत्व।

5 बिहार में छोटे दलों की दल बदल की प्रवृत्ति।

6 निष्कर्ष एवं सुझाव।

Bibliography / संदर्भ सूची

- कश्यप, सुभाष (1997) : दलबदल और राज्यों की राजनीति, उप्पल पब्लिकेशन नई दिल्ली।
- कश्यप, सुभाष (1991) : कोलिशन गवर्नमेंटस एंड पॉलिटिक्स इन इंडिया उप्पल पब्लिकेशन नई दिल्ली।
- कुमार, दिनेश (2019) : गठबंधन राजनीति में बिहार : डबल इंजन सरकार, प्रभात प्रकाशन।
- विद्युत चक्रवती (2014) : कोलिशन पॉलिटिक्स इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- सिंह, संतोष : रूल्ड वो मिसरूल्ड : स्टोरी एंड डेस्टिनी ऑफ बिहार, ब्लूमस्बर्ड इंडिया पब्लिशर्स।
- बनर्जी के (1986) : रीजनल पॉलीटिकल पार्टीज एंड सेंटर स्टेट रिलेशन्स, जर्नल ऑफ कंस्टीटूशन एंड पार्लियामेंट्री स्टडीज नई दिल्ली।
- नारायण, इकबाल : स्टेट पॉलिटिक्स इन इंडिया, मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली 1967, 1976।
- फाड़िया, बाबूलाल : भारत में राज्यों की राजनीति, साहित्य पब्लिकेशन आगरा 1986।
- राज्यसभा टी०वी०, बीबीसी हिंदी, दैनिक जागरण, द हिंदू।
- शोधगंगा, गूगल स्कॉलर।
- भांभरी, सी०पी० : द जनता पार्टी : ए प्रोफ़ाइल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1980।
- कुमार, अरुण : ऑन कोलिशन कोर्स, प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली 1990।